

अरदास

१६१ ओंकार श्री वाहिगुरु जी की फतहि ॥

श्री भगौती जी सहाइ ॥ वार श्री भगौती जी की ॥

पातशाही १० ॥

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लई धिआइ ॥ फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासे होई सहाइ ॥ अरजन हरिगोबिंद नो सिमरों श्री हरिराइ ॥ श्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिटे सभि दुख जाइ ॥ तेग बहादर सिमरिऐ घर नउनिधि आवै धाइ ॥ सभ थाई होइ सहाइ ॥ दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब जी महाराज पंथ दे वाली सभ थाई होइ सहाइ ॥ दसां पातशाहीआं जी दी जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे पाठ दीदार दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरु ॥

पंजां पिआरिआं, चौहां साहिबजादिआं, चाल्हीआं मुकतिआं, हठीआं, जपीआं, तपीआं, जिन्हां नाम जपिआ, वंड छकिआ, देग चलाई, तेग वाही, देख के अणडिट्ठ कीता, तिन्हा पिआरिआं, सचिआरिआं दी कमाई दा धिआन धर के, खालसा जी बोलो जी वाहिगुरु ॥

जिन्हां सिंघां सिंघणीआं ने धरम हेत सीस दिते, बंद बंद कटाए, खोपरीआं लुहाईआं, चरखड़ीआं ते चड्हे, आरिआं नाल चिराए गए, गुरदुआरिआं दी सेवा लई कुरबानीआं कीतीआं, धरम नहीं हारिआ, सिख्खी केसां सुआसां नाल निभाही, तिन्हां दी कमाई दा धिआन धर के, खालसा जी, बोलो जी वाहिगुरु ॥

पंजां तखतां, सरबत्त गुरदुआरिआं दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरु ॥

प्रिथमे सरबत्त खालसा जी की अरदास है जी, सरबत्त खालसा जी को वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु चित्त आवे, चित्त आवन का सदका सरब सुख होवे ॥ जहां जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रछिछआ रिआइत, देग तेग फतह, बिरद की पैज, पंथ की जीत, श्री साहिब जी सहाइ, खालसे जी के बोल बाले, बोलो जी वाहिगुरु ॥

सिख्खां नूं सिख्खी दान, केस दान, रहित दान, बिबेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानां सिर दान नाम दान, श्री अंम्रितसर जी दे इशनान, चौंकीआं, झंडे, बुंगे, जुगो जुग अटल्ल, धरम का जैकार, बोलो जी वाहिगुरु ॥

सिख्खां दा मन नीवां, मत्त उच्ची, मत्त दा राखा अकाल पुरख वाहिगुरु ॥ हे अकाल पुरख, आपणे पंथ दे सदा सहाई दातार जीओ ॥ श्री ननकाणा साहिब ते होर गुरदुआरिआं गुरधामां दे, जिन्हां तों पंथ नूं विछोड़िआ गिआ है, खुल्हे दरशन दीदार ते सेवा संभाल दा दान खालसा जी नूं बखशो ॥ हे निमाणिआ दे माण, निताणिआ दे ताण, निओटिआं दी ओट, सचे पिता, वाहिगुरु ॥ आप जी दे हज़ूर (----) अरदास है जी ॥ अखर वाधा घाटा भुल्ल चुक्क माफ़ करनी ॥ सरबत्त दे कारज रास करने ॥ सेई पिआरे मेल, जिन्हां मिलिआं तेरा नाम चित्त आवे ॥ नानक नाम चड्हदी कला, तेरे भाणे सरबत्त दा भला ॥

वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतहि ॥

नोट -- (---) जिस काम के लिये संगत जुड़ी है, जो बाणी पढ़ी है, उसका वरणन करें।